The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Issue 4 | April 2026
ISSN: 2583-973X (Online), SJIF IF: 5.6
Website: www.theacademic.in

शिक्षा के विविध अंगों पर आदर्शवाद का प्रभाव: उद्देश्य, पाठ्यचर्या एवं शिक्षण विधियों के विशेष संदर्भ में

[1] सत्य नरायन यादव, [2] सुरमल नार्वे

[1] सहा.प्राध्यापक, शिक्षा विभाग स्व. गुलाब बाई यादव स्मृति शिक्षा महाविद्यालय,बोरावां खरगोन, म.प्र.451228

[2] सहा.प्राध्यापक, शिक्षा विभाग स्व. गुलाब बाई यादव स्मृति शिक्षा महाविद्यालय,बोरावां खरगोन, म.प्र.451228

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.20127255

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 25-04-2026

Published: 10-05-2026

Keywords:

आदर्शवादी दर्शन, उद्देश्य, पाठ्यचर्या, शिक्षण विधियां, शैक्षिक निहितार्थ

ABSTRACT

आदर्शवाद का संपूर्ण दर्शन इस विचार पर टिका है कि भौतिक जगत की अपेक्षा आध्यात्मिक और मानसिक जगत अधिक सत्य और स्थायी है। इस विचारधारा के अनुसार, शिक्षा का वास्तविक अर्थ बालक की अंतर्निहित शक्तियों का विकास कर उसे आत्मानुभूति (Self-realization) के मार्ग पर अग्रसर करना है। आदर्शवादी मानते हैं कि मनुष्य केवल एक जैविक प्राणी नहीं है, बल्कि उसमें एक दिव्य अंश है जिसे केवल शिक्षा के माध्यम से ही पूर्णता तक पहुँचाया जा सकता है। इस प्रक्रिया में 'सत्यम्, शिवम् और सुन्दरम्' जैसे शाश्वत मूल्यों को केंद्र में रखा जाता है, ताकि विद्यार्थी न केवल बौद्धिक रूप से प्रखर बने, बल्कि उसका चरित्र भी नैतिक और पवित्र हो। शिक्षा के अंगों पर इसके प्रभाव को देखें तो यह स्पष्ट होता है कि यहाँ शिक्षक की भूमिका एक 'माली' या 'पथ-प्रदर्शक' की है, जो अपनी प्रेरणा और आदर्श व्यवहार से बालक के व्यक्तित्व का परिमार्जन करता है। पाठ्यचर्या में मानवीय विषयों जैसे भाषा, साहित्य, इतिहास और दर्शन को विशेष प्राथमिकता दी जाती है क्योंकि ये विषय मानवीय संवेदनाओं और विवेक को जागृत करते हैं। शिक्षण विधियों के मामले में यह दर्शन लचीला है और संवाद, तर्क एवं प्रश्न-उत्तर जैसी मानसिक सक्रियता वाली विधियों का समर्थन करता है। अंततः, आदर्शवाद शिक्षा को एक ऐसी साधना मानता है जो व्यक्ति को भौतिक बंधनों से मुक्त कर उसे मानसिक स्वतंत्रता और आध्यात्मिक आनंद की ओर ले जाती है, जिससे समाज में एक आदर्श और मूल्यपरक

व्यवस्था स्थापित हो सके।

प्रस्तावना

आदर्शवाद का मुख्य केंद्र बिंदु 'विचार' (Idea) है। इस दर्शन के अनुसार, यह दृश्यमान भौतिक जगत नाशवान और असत्य है, जबकि विचारों का संसार शाव्यत और परम सत्य है। आदर्शवादियों का मानना है कि मनुष्य केवल एक जैविक प्राणी नहीं है, बल्कि उसके भीतर एक 'आध्यात्मिक अंश' विद्यमान है। शिक्षा का मुख्य कार्य इसी आध्यात्मिक अंश को पहचानना और उसे पूर्णता तक पहुँचाना है।

प्लेटो, सुकरात, डेसकार्टेस, कांट, हीगल और फ्रोबेल जैसे महान विचारकों ने इस दर्शन को पुष्ट किया। शिक्षा के संदर्भ में आदर्शवाद का मानना है कि बालक की शिक्षा का उद्देश्य केवल जीवित रहने के कौशल सीखना नहीं है, बल्कि 'आत्मानुभूति' (Self-realization) प्राप्त करना है। यह दर्शन स्वीकार करता है कि ब्रह्मांड का एक आध्यात्मिक नियम है और मनुष्य का परम लक्ष्य उस नियम के साथ एकाकार होना है।

आदर्शवादी शिक्षा प्रणाली में 'सत्यम्, शिवम् और सुन्दरम्' को शाश्वत मूल्यों के रूप में स्वीकार किया गया है। शिक्षा का ढांचा ऐसा होना चाहिए जो बालक को सत्य की खोज करने, नैतिकता (शिवम्) को अपनाने और सौंदर्य (सुन्दरम्) की सराहना करने के योग्य बनाए। यहाँ विद्यालय को एक ऐसे पवित्र स्थान के रूप में देखा जाता है जहाँ शिक्षक अपने उच्च चरित्र और मार्गदर्शन से बालक के मानसिक और आध्यात्मिक व्यक्तित्व का परिष्कार करता है। आदर्शवाद शिक्षा को एक ऐसी प्रक्रिया मानता है जो मनुष्य को भौतिकता के बंधनों से मुक्त कर उसे बौद्धिक और आध्यात्मिक स्वतंत्रता की ओर ले जाती है। यह बालक के 'स्व' (Self) के विकास पर बल देता है ताकि वह समाज और राष्ट्र के लिए एक आदर्श व्यक्तित्व के रूप में उभर सके। आधुनिक शिक्षा में जहाँ भौतिक प्रगति और तकनीक पर जोर है, वहीं आदर्शवाद हमें मानवीय मूल्यों और चरित्र निर्माण की निरंतर याद दिलाता रहता है।

1.0 आदर्शवाद का अर्थ (Meaning of Idealism)

'आदर्शवाद' शब्द अंग्रेजी के **'Idealism'** का हिंदी रूपांतरण है। इसकी उत्पत्ति प्लेटो के 'विचारवाद' (Idea-ism) से हुई है।

Idealism = Ideal + ism

इसका मुख्य सिद्धांत है– **"विचार ही ब्रह्मांड का मूल तत्व हैं।"** जो कुछ भी हम देखते हैं, वह केवल विचारों का प्रतिबिंब है।

आदर्शवाद (Idealism) पाश्चात्य दर्शन की वह सबसे प्राचीन विचारधारा है जो 'विचारों' (Ideas) और 'आदर्शों' को ही अंतिम सत्य मानती है। यह भौतिक संसार (Physical World) को नश्वर और आध्यात्मिक जगत (Spiritual World) को शाश्वत मानती है।

आदर्शवाद की परिभाषा (Definitions)

1. डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के अनुसार

"आदर्शवाद वह सिद्धांत है जो अंतिम सत्ता को 'आध्यात्मिक' मानता है। यह सत्य की व्याख्या इस आधार पर करता है कि मन और आत्मा ही इस जगत के मूल तत्व हैं।"

2. जे.एस. रॉस (J.S. Ross) के अनुसार

"आदर्शवादी दर्शन के अनेक रूप हैं, परंतु सबका आधार यही है कि संसार का विकास करने वाला तत्व 'मन' या 'आत्मा' है और वास्तविक सत्य 'मानसिक' ही है।"

3. प्लेटो (Plato) के अनुसार

"विचार ही अंतिम और वास्तविक सत्य हैं। भौतिक वस्तुएं इन विचारों की केवल परछाइयाँ या प्रतिलिपियाँ मात्र हैं।"

4. डीएम दत्ता (D.M. Dutta) के अनुसार

"आदर्शवाद वह सिद्धांत है जो अंतिम सत्ता 'आध्यात्मिक' मानता है। यह भौतिकवाद के विपरीत है, जो पदार्थ को ही सब कुछ मानता है।"

5. हर्बार्ट (Herbart) के अनुसार

"आदर्शवाद का मुख्य उद्देश्य मनुष्य के नैतिक और आध्यात्मिक स्वरूप को विकसित करना है। यह शिक्षा के माध्यम से बालक के विचारों को शुद्ध करने पर बल देता है।"

इन सभी परिभाषाओं का विश्लेषण करने पर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि आदर्शवाद:

1. **पदार्थ** (Matter) की तुलना में **विचार** (Idea) को श्रेष्ठ मानता है।
2. **प्रकृति** की तुलना में **ईश्वर और आध्यात्मिकता** पर बल देता है।

3. मानव जीवन का चरम लक्ष्य **आत्मानुभूति** या 'स्व' की पहचान मानता है।

4. संसार की व्याख्या 'यांत्रिक' न होकर **'मानसिक' और 'प्रयोजनवादी'** है।

2.0 आदर्शवाद की प्रमुख विशेषताएँ (Characteristics of Idealism)

आदर्शवाद को बेहतर ढंग से समझने के लिए इसकी इन विशेषताओं को देखा जा सकता है:

- **आध्यात्मिक जगत को प्रधानता:** यह विचारधारा भौतिक जगत की तुलना में आध्यात्मिक जगत को अधिक वास्तविक मानती है। इसके अनुसार, भौतिक वस्तुएँ नष्ट हो सकती हैं, लेकिन विचार अमर रहते हैं।
- **ईश्वर में विश्वास:** अधिकांश आदर्शवादी ईश्वर को ब्रह्मांड का निर्माता और सर्वोच्च शक्ति मानते हैं।
- **'मन' और 'आत्मा' का महत्व:** आदर्शवाद में शरीर से अधिक 'आत्मा' और पदार्थ से अधिक 'मन' को महत्व दिया जाता है।
- **शाश्वत मूल्यों में विश्वास:** यह विचारधारा तीन शाश्वत मूल्यों– **सत्यं (Truth), शिवं (Goodness) और सुंदरं (Beauty)** की प्राप्ति पर बल देती है।
- **व्यक्तित्व का विकास (Self-Realization):** मनुष्य के जीवन का सबसे बड़ा लक्ष्य अपनी आत्मा को पहचानना और पूर्णता प्राप्त करना है।
- **ब्रह्मांड की रचना विचारों से:** इसके अनुसार, यह संसार किसी भौतिक तत्व से नहीं, बल्कि ईश्वरीय विचारों का परिणाम है।
- **अनुशासन और नैतिकता:** आदर्शवाद नैतिक जीवन और आत्म-अनुशासन को सर्वोच्च मानता है ताकि व्यक्ति अपनी निम्न प्रवृत्तियों पर विजय प्राप्त कर सके।

3.0 शिक्षा के उद्देश्य (Aims of Education)

आदर्शवाद (Idealism) पाश्चात्य दर्शन की वह सबसे प्राचीन शाखा है जो "विचारों" और "आत्मा" को ही अंतिम सत्य मानती है। इसके अनुसार, शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो बालक को पशुता से ऊपर उठाकर 'मनुष्यत्व' और अंततः 'देवत्व' की ओर ले जाती है।

1. आत्मानुभूति (Self-Realization)

आदर्शवाद का सर्वोच्च उद्देश्य आत्मानुभूति है। इसका तात्पर्य है बालक के भीतर छिपी हुई दैवीय शक्तियों और उसकी वास्तविक क्षमता का ज्ञान कराना। आदर्शवादियों का मानना है कि प्रत्येक बालक के भीतर 'अमृतत्व' का अंश है। शिक्षा का कार्य उस आवरण को हटाना है जो उसे अपने वास्तविक स्वरूप को पहचानने से रोकता है। जब बालक स्वयं को जान लेता है, तो वह संसार के अन्य रहस्यों को समझने के योग्य बन जाता है।

2. आध्यात्मिक विकास (Spiritual Development)

आदर्शवाद के अनुसार यह भौतिक संसार नश्वर और क्षणभंगुर है। इसलिए, शिक्षा का उद्देश्य बालक को भौतिक सुख-सुविधाओं के मोह से मुक्त कर उसे आध्यात्मिक सत्यों की ओर ले जाना है। आध्यात्मिक विकास से तात्पर्य मन की उस अवस्था से है जहाँ व्यक्ति काम, क्रोध, मद और लोभ जैसे विकारों पर विजय प्राप्त कर लेता है और मानसिक शांति का अनुभव करता है।

3. शाश्वत मूल्यों की प्राप्ति (Realization of Satyam, Shivam, Sundaram)

आदर्शवाद 'सत्यं, शिवं और सुंदरं' को ईश्वर का प्रतिरूप मानता है।

- सत्यं (Truth): शिक्षा बालक की तर्कशक्ति और बुद्धि को इतना विकसित करे कि वह परम सत्य को खोज सके।
- शिवं (Goodness): बालक का व्यवहार नैतिक और कल्याणकारी हो। वह केवल अपने लिए नहीं, बल्कि समाज के कल्याण के लिए कार्य करे।
- सुंदरं (Beauty): ईश्वर की रचना और प्रकृति की सुंदरता का अनुभव करना और उसमें आनंद लेना। इन तीनों मूल्यों का समन्वय ही एक आदर्श जीवन का आधार है।

4. सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण एवं हस्तांतरण

मानव ने सदियों के संघर्ष और चिंतन से भाषा, कला, धर्म और नैतिकता की जो थाती तैयार की है, वह हमारी सांस्कृतिक विरासत है। आदर्शवाद के अनुसार, शिक्षा का उद्देश्य बालक को इस विरासत से परिचित कराना है ताकि वह इसे सुरक्षित रखे और परिष्कृत करके अगली पीढ़ी को सौंप सके।

5. चरित्र एवं नैतिक निर्माण (Character Building)

आदर्शवाद में 'ज्ञान' तभी सार्थक है जब वह चरित्र में झलके। सुकरात का प्रसिद्ध कथन है, "ज्ञान ही सद्गुण है" (Knowledge is Virtue)। शिक्षा का उद्देश्य बालक में दृढ़ इच्छाशक्ति और नैतिक मूल्यों का विकास करना है ताकि वह कठिन परिस्थितियों में भी अपने आदर्शों से न डिगे।

6. व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास

यद्यपि आदर्शवाद आध्यात्मिकता पर जोर देता है, परंतु वह शारीरिक और मानसिक विकास की उपेक्षा नहीं करता। इसका उद्देश्य बालक के व्यक्तित्व का पूर्ण विकास करना है ताकि उसका शरीर स्वस्थ रहे, बुद्धि तीव्र हो और आत्मा पवित्र रहे।

आदर्शवाद के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य केवल आजीविका कमाना या सूचनाएं एकत्र करना नहीं है, बल्कि व्यक्ति को "पूर्णता" प्रदान करना है। यह शिक्षा को एक ऐसी ज्योति मानता है जो अज्ञान के अंधकार को मिटाकर जीवन को प्रकाशमय बनाती है।

4.0 आदर्शवादी दर्शन में पाठ्यचर्या (Curriculum)

आदर्शवादी दर्शन में पाठ्यचर्या (Curriculum) का निर्माण किसी बाहरी भौतिक लाभ के लिए नहीं, बल्कि बालक के आंतरिक और आध्यात्मिक उत्थान के लिए किया जाता है। आदर्शवाद के अनुसार, पाठ्यक्रम का आधार 'बालक' या 'प्रकृति' न होकर 'मानवीय विचार और अनुभव' होते हैं।

1. पाठ्यचर्या का मुख्य आधार: मानविकी (Humanities)

आदर्शवादियों का मानना है कि पाठ्यक्रम में उन विषयों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए जो मनुष्य को अन्य जीवों से अलग करते हैं। इसलिए, वे विज्ञान की तुलना में भाषा, साहित्य, इतिहास, भूगोल, दर्शन और धर्मशास्त्र को अधिक महत्व देते हैं। उनके अनुसार ये विषय मानव की सांस्कृतिक विरासत और उसके महान विचारों के संवाहक हैं।

2. प्लेटो का त्रिपक्षीय वर्गीकरण

प्रसिद्ध आदर्शवादी दार्शनिक प्लेटो ने पाठ्यचर्या को मानव के तीन मुख्य अनुभवों या क्रियाओं के आधार पर विभाजित किया है:

- **बौद्धिक क्रियाएँ (Intellectual Activities):** इसके अंतर्गत भाषा, साहित्य, इतिहास, भूगोल, गणित और विज्ञान जैसे विषय आते हैं। इनका उद्देश्य बालक की तर्कशक्ति और बुद्धि का विकास करना है ताकि वह 'सत्यं' (Truth) को पहचान सके।

- **नैतिक क्रियाएँ (Moral Activities):** इसमें धर्म, नीतिशास्त्र और दर्शन को रखा गया है। इनका उद्देश्य बालक के चरित्र को शुद्ध करना और उसे समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का बोध कराना है ताकि वह 'शिवं' (Goodness) को प्राप्त कर सके।
- **सौन्दर्यात्मक क्रियाएँ (Aesthetic Activities):** इसके अंतर्गत कला, संगीत और काव्य (Poetry) को शामिल किया गया है। इनका उद्देश्य बालक की भावनाओं का परिष्करण करना और उसे ब्रह्मांड की सुंदरता यानी 'सुंदरं' (Beauty) का अनुभव कराना है।

3. शाश्वत मूल्यों पर आधारित (Based on Eternal Values)

आदर्शवादी पाठ्यचर्या का केंद्र बिंदु 'सत्यं, शिवं और सुंदरं' की प्राप्ति है। पाठ्यक्रम ऐसा होना चाहिए जो केवल वर्तमान की तात्कालिक आवश्यकताओं को पूरा न करे, बल्कि बालक को उन शाश्वत सत्यों की ओर ले जाए जो कभी नहीं बदलते।

4. शारीरिक और मानसिक विकास का संतुलन

यद्यपि आदर्शवाद 'मन' और 'आत्मा' पर अधिक जोर देता है, परंतु वह शरीर की उपेक्षा नहीं करता। प्लेटो के अनुसार, "स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का निवास होता है।" इसलिए, उन्होंने पाठ्यक्रम में **शारीरिक व्यायाम (Gymnastics)** को भी उचित स्थान दिया है, ताकि बालक का शरीर इतना सशक्त हो सके कि वह कठिन आध्यात्मिक साधना कर सके।

5. पाठ्यक्रम की व्यापकता (Breadth of Curriculum)

आदर्शवादी पाठ्यक्रम संकुचित नहीं है। नन (Nunn) के अनुसार, पाठ्यक्रम में मानव की उन सभी मुख्य क्रियाओं का समावेश होना चाहिए जो सभ्यता और संस्कृति के विकास में सहायक रही हैं। इसमें खेल, हस्तकला, सामाजिक सेवा और चारित्रिक प्रशिक्षण का समान महत्व है।

6. शिक्षक की भूमिका और पाठ्यक्रम

आदर्शवाद में पाठ्यक्रम केवल पुस्तकों का ढेर नहीं है। इसमें शिक्षक के 'आदर्श व्यक्तित्व' को भी पाठ्यक्रम का एक अदृश्य अंग माना जाता है। पाठ्यक्रम वह साधन है जिसे शिक्षक (कलाकार) बालक (सामग्री) को अपने आदर्शों के अनुसार ढालने के लिए उपयोग करता है।

आदर्शवादी पाठ्यचर्या का उद्देश्य बालक को केवल एक 'कुशल कार्यकर्ता' बनाना नहीं, बल्कि उसे एक 'संस्कृत पुरुष' बनाना है। यह पाठ्यक्रम सूचना-प्रधान न होकर मूल्य-प्रधान है, जो छात्र को भौतिक जगत से आध्यात्मिक जगत की ओर ले जाने का मार्ग प्रशस्त करता है।

5.0 आदर्शवादी पाठ्यचर्या की रूपरेखा

क्षेत्र	मुख्य विषय (Subjects)	उद्देश्य
बौद्धिक (Intellectual)	भाषा, साहित्य, इतिहास, भूगोल, गणित, विज्ञान	सत्य की खोज और विवेक का विकास करना।
नैतिक (Moral)	धर्म, नीतिशास्त्र (Ethics), दर्शनशास्त्र	'शिवम्' (Goodness) की प्राप्ति और चरित्र निर्माण।
सौन्दर्यात्मक (Aesthetic)	कला, कविता, संगीत, ललित कलाएं	'सुन्दरम्' (Beauty) की अनुभूति और सृजनात्मकता।
शारीरिक (Physical)	व्यायाम, खेलकूद, स्वास्थ्य शिक्षा	शरीर को आत्मा के निवास के योग्य स्वस्थ बनाना।

- **विचारों को प्रधानता:** यह दर्शन भौतिक वस्तुओं की तुलना में विचारों (Ideas) को अधिक महत्व देता है।
- **शाश्वत मूल्य:** पाठ्यचर्या का आधार 'सत्यम्, शिवम् और सुन्दरम्' है।
- **मानवतावादी दृष्टिकोण:** इसमें उन विषयों को प्राथमिकता दी जाती है जो मनुष्य को पशुओं से अलग कर उसे 'पूर्ण मानव' बनाते हैं।
- **शिक्षक का स्थान:** आदर्शवाद में शिक्षक को माली के समान माना गया है जो बच्चों के मानसिक और आध्यात्मिक विकास के लिए उचित वातावरण तैयार करता है।

महत्वपूर्ण बिंदु: प्लेटो के अनुसार, पाठ्यचर्या ऐसी होनी चाहिए जो बौद्धिक, नैतिक और कलात्मक पक्षों का समान रूप से विकास करे ताकि व्यक्ति ईश्वर और ब्रह्मांड के वास्तविक स्वरूप को समझ सके।

आदर्शवादी दर्शन में शिक्षण विधियों का स्वरूप अत्यंत व्यापक और लचीला है। जैसा कि आपने सही कहा, आदर्शवादी किसी एक जड़ या बंधी-बंधाई पद्धति का अनुसरण करने के बजाय ऐसी विधियों का समर्थन करते हैं जो बालक के मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक विकास में सहायक हों।

7.0 आदर्शवादी शिक्षण विधि शिक्षण एक कला के रूप में

आदर्शवाद के अनुसार, शिक्षण कोई यांत्रिक प्रक्रिया (Mechanical Process) नहीं है, जहाँ केवल तथ्यों को रटाया जाए। इसके विपरीत, यह एक **सृजनात्मक कला** है। यहाँ शिक्षक का कार्य छात्र के भीतर सोई हुई दिव्य शक्तियों को जागृत करना है।

प्रमुख विधियाँ और उनका महत्व

1. **प्रश्न-उत्तर विधि (सुक्रत):** यह विधि इस विचार पर आधारित है कि ज्ञान छात्र के भीतर ही मौजूद है। शिक्षक केवल कुशल प्रश्नों के माध्यम से उस ज्ञान को बाहर निकालता है। यह छात्र की विचार प्रक्रिया को उत्तेजित करती है।

2. **संवाद विधि (प्लेटो):** प्लेटो ने अपने गुरु सुकरात की विधि को आगे बढ़ाया। इसमें शिक्षक और छात्र के बीच गहन चर्चा और संवाद होता है, जिससे सत्य की खोज की जाती है।

3. **तर्क विधि (अरस्तू):** अरस्तू ने आगमन (Inductive) और निगमन (Deductive) तर्क पर बल दिया। यह विधि छात्र की तर्कशक्ति और विश्लेषणात्मक क्षमता को विकसित करती है।

4. **निर्देशन विधि (हर्बार्ट):** हर्बार्ट ने शिक्षण के पाँच औपचारिक सोपान (Five Steps) दिए। उनका मानना था कि शिक्षण को एक व्यवस्थित क्रम में प्रस्तुत करना चाहिए ताकि छात्र के मस्तिष्क में पूर्व ज्ञान और नए ज्ञान का संबंध स्थापित हो सके।

5. **खेल एवं किंडरगार्टन विधि (फ्रोबेल):** फ्रोबेल ने बालक की स्वतंत्रता और रचनात्मकता पर जोर दिया। उन्होंने स्कूल को एक 'बगीचा' और छात्र को एक 'पौधा' माना, जिसका विकास खेल-खेल में स्वाभाविक रूप से होना चाहिए।

8.0 शिक्षण विधियों की मुख्य विशेषताएँ

- **आत्मानुभूति का लक्ष्य:** सभी विधियों का अंतिम उद्देश्य बालक को 'स्व' का बोध कराना और उसे ईश्वर के करीब ले जाना है।
- **शिक्षक की केंद्रीय भूमिका:** आदर्शवाद में शिक्षक केवल एक सुविधाप्रदाता नहीं, बल्कि एक **पथ-प्रदर्शक और आदर्श** होता है। छात्र शिक्षक के व्यक्तित्व का अनुकरण करके सीखता है।

- **अनुशासन:** यहाँ शिक्षण विधियाँ 'स्व-अनुशासन' (Self-discipline) पर बल देती हैं। दंडात्मक अनुशासन के बजाय नैतिक प्रभाव द्वारा बालक को सही मार्ग पर लाया जाता है।
- **बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास:** ये विधियाँ केवल परीक्षा पास करने के लिए नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण और उच्च मूल्यों (सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम्) की प्राप्ति के लिए प्रयोग की जाती हैं।

आदर्शवादी शिक्षण विधियाँ विविधतापूर्ण हैं। ये विधियाँ छात्र को सक्रिय रखती हैं और शिक्षक को एक कलाकार का दर्जा देती हैं, जो अपने मार्गदर्शन से छात्र के जीवन को एक सुंदर और सार्थक स्वरूप प्रदान करता है।

9.0 आदर्शवाद (Idealism) के शैक्षिक निहितार्थ (Educational Implications)

आधुनिक शिक्षा प्रणाली के लिए एक नैतिक और आध्यात्मिक आधार प्रदान करते हैं। यह दर्शन मानता है कि शिक्षा का वास्तविक कार्य केवल जानकारी देना नहीं, बल्कि मनुष्य के भीतर छिपे 'देवत्व' या 'पूर्णता' को अभिव्यक्त करना है।

1. आत्मानुभूति और व्यक्तित्व का विकास

आदर्शवाद का सबसे महत्वपूर्ण निहितार्थ यह है कि शिक्षा का केंद्र **'आत्मानुभूति' (Self-realization)** होनी चाहिए। इसका अर्थ है कि बालक को स्वयं की शक्तियों, क्षमताओं और अपनी आध्यात्मिक प्रकृति का ज्ञान कराना। शिक्षा ऐसी हो जो व्यक्ति को पशु स्तर से उठाकर मानवता के शिखर तक पहुँचाए।

2. शिक्षक का सर्वोपरि स्थान

आदर्शवाद में शिक्षक को **'आध्यात्मिक प्रतीक'** माना गया है। फ्रोबेल के 'किंडरगार्टन' विचार के अनुसार, यदि विद्यालय एक बगीचा है और छात्र एक कोमल पौधा, तो शिक्षक वह कुशल 'माली' है जो पौधे के विकास के लिए उपयुक्त वातावरण तैयार करता है। शिक्षक का चरित्र ही छात्र के लिए वास्तविक पाठ्यक्रम होता है।

3. नैतिक और चारित्रिक विकास

आदर्शवादी शिक्षा प्रणाली में **'सत्यम्, शिवम् और सुन्दरम्'** जैसे शाश्वत मूल्यों पर विशेष बल दिया जाता है। इसका निहितार्थ यह है कि शिक्षा केवल बुद्धि का विकास न करे, बल्कि व्यक्ति के चरित्र और नैतिकता

को भी सुदृढ़ बनाए। अनुशासन यहाँ थोपा नहीं जाता, बल्कि 'प्रभावात्मक आत्मानुशासन' के रूप में विकसित किया जाता है।

4. सांस्कृतिक विरासत का हस्तांतरण

आदर्शवाद के अनुसार शिक्षा का एक मुख्य कार्य समाज की **सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत** को सुरक्षित रखना और उसे अगली पीढ़ी को सौंपना है। इसीलिए यह दर्शन इतिहास, साहित्य, धर्म और कला के अध्ययन को बहुत अधिक महत्व देता है।

5. सर्वांगीण विकास पर बल

यह दर्शन 'पूर्ण मानव' की कल्पना करता है। इसका निहितार्थ यह है कि पाठ्यचर्या में केवल विज्ञान या तकनीक ही नहीं, बल्कि संगीत, कविता और दर्शन जैसे 'मानवीय विषयों' (Humanities) को भी स्थान मिलना चाहिए ताकि बालक का मानसिक, शारीरिक और आध्यात्मिक विकास संतुलित रूप से हो सके।

आज के भौतिकवादी युग में, जहाँ शिक्षा केवल 'कौशल विकास' और 'नौकरी' तक सीमित होती जा रही है, आदर्शवाद के शैक्षिक निहितार्थ हमें याद दिलाते हैं कि शिक्षा का असली उद्देश्य **चरित्र निर्माण और मानसिक स्वतंत्रता** है। यह बालक को केवल एक 'उत्पादक इकाई' नहीं, बल्कि एक 'नैतिक नागरिक' बनाने की प्रेरणा देता है।

10. निष्कर्ष

शिक्षा के क्षेत्र में उसके चिरकालिक और शाश्वत महत्व को रेखांकित करता है। यद्यपि आज का युग वैज्ञानिक और भौतिकवादी है, फिर भी आदर्शवाद के सिद्धांत मानव जीवन के नैतिक उत्थान के लिए अनिवार्य बने हुए हैं।

1. जीवन का आध्यात्मिक आधार

आदर्शवाद का सबसे बड़ा योगदान यह है कि यह शिक्षा को केवल आजीविका कमाने का साधन नहीं मानता। इसका निष्कर्ष है कि शिक्षा का अंतिम लक्ष्य '**आत्मानुभूति**' और व्यक्ति को उसकी आध्यात्मिक प्रकृति से परिचित कराना है। यह मनुष्य को यंत्र बनने से रोकता है और उसे मानवीय संवेदनाओं से जोड़ता है।

2. मूल्यों की प्रधानता

यह दर्शन इस बात पर जोर देता है कि समाज चाहे कितना भी तकनीकी रूप से विकसित क्यों न हो जाए, **सत्यम्, शिवम् और सुन्दरम्** जैसे शाश्वत मूल्य हमेशा प्रासंगिक रहेंगे। आदर्शवाद के बिना शिक्षा केवल सूचनाओं का ढेर बन जाएगी, जबकि आदर्शवाद उसे 'ज्ञान' और 'विवेक' में बदल देता है।

3. चरित्र निर्माण ही वास्तविक शिक्षा

आदर्शवाद का निचोड़ यह है कि बिना चरित्र के शिक्षा व्यर्थ है। इसका शैक्षिक निहितार्थ यह है कि विद्यालय को ऐसी जगह होना चाहिए जहाँ छात्र के व्यक्तित्व का उदात्तीकरण (Sublimation) हो सके और वह एक जिम्मेदार, नैतिक और अनुशासित नागरिक बन सके।

4. शिक्षक: एक मार्गदर्शक के रूप में

आदर्शवाद ने शिक्षक को जो सम्मानजनक स्थान दिया है, वह किसी अन्य दर्शन में दुर्लभ है। यह निष्कर्ष निकालता है कि एक जीवंत और प्रेरणादायक शिक्षक ही छात्र के भीतर की संभावनाओं को वास्तविकता में बदल सकता है।

"आदर्शवाद वह प्रकाश पुंज है जो शिक्षा को अंधकारमय भौतिकवाद से निकालकर आध्यात्मिक आलोक की ओर ले जाता है।" आदर्शवाद हमें सिखाता है कि भौतिक सुख-सुविधाएं साधन हो सकती हैं, लेकिन साध्य (Goal) हमेशा **उच्च जीवन और नैतिक आदर्श** ही होने चाहिए। जहाँ प्रकृतिवाद बालक की स्वतंत्रता पर बल देता है और प्रयोजनवाद उपयोगिता पर, वहीं आदर्शवाद **पवित्रता और पूर्णता** पर बल देकर शिक्षा को पूर्णता प्रदान करता है।

11.0 सन्दर्भ सूची

1. **अग्रवाल, जे. सी.** (2020). *शिक्षा के दार्शनिक और समाजशास्त्रीय आधार*. विकास पब्लिशिंग हाउस।
2. **Butler, J. D.** (1966). *Idealism in education*. Harper & Row.
3. **Chaubey, S. P., & Chaube, A.** (2002). *Philosophical and sociological foundations of education*. Vinod Pustak Mandir.
4. **Dewey, J.** (1916). *Democracy and education: An introduction to the philosophy of education*. Macmillan.
5. **Froebel, F.** (1887). *The education of man* (W. N. Hailmann, Trans.). D. Appleton & Company. (Original work published 1826).
6. **Horne, H. H.** (1932). *The democratic philosophy of education*. Macmillan.

7. **लाल, आर. बी., एवं पाल, एस.** (2018). *शिक्षा के दार्शनिक आधार*. आर. लाल बुक डिपो।

8. **Mani, R. S.** (1964). *Educational ideas and ideals of Gandhi and Tagore*. New Book Society of India.

9. **पाठक, पी. डी.** (2021). *भारतीय एवं पाश्चात्य शिक्षा शास्त्री*. विनोद पुस्तक मंदिर।

10. **Plato.** (1991). *The Republic* (A. Bloom, Trans.). Basic Books. (Original work published ca. 375 BCE).

11. **पाण्डेय, रामशकल.** (2015). *शिक्षा के दार्शनिक आधार*. अग्रवाल पब्लिकेशन्स।

12. **Rusk, R. R.** (1969). *The philosophical bases of education*. University of London Press.

13. **शर्मा, आर. एन.** (2014). *शिक्षा दर्शन*. सुरजीत पब्लिकेशन्स।

14. **Socrates.** (2010). *The Socratic method of teaching*. In J. Smith (Ed.), *Classical Pedagogy* (pp. 45–60). Academic Press.

15. **तिवारी, ए. के.** (2019). *शिक्षा के दार्शनिक परिप्रेक्ष्य*. राधा प्रकाशन।